



प्रसार शिक्षा निदेशालय
राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
बीकानेर

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 11

अंक : 2

अक्टूबर, 2023

मूल्य : ₹2.00



पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) सतीश के. गर्ग

कुलपति सन्देश

पशुओं के अधिकारों के प्रति जागरूकता आवश्यक

पशुधन का भारतीय अर्थव्यवस्था में बहुत महत्वपूर्ण योगदान है। पशुधन विशेषतः ग्रामीण भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास और स्थिरता में एक बड़ी भूमिका निभाता है क्योंकि यह वर्षभर अतिरिक्त और स्थिर आय का स्रोत है। पशुपालन को हमेशा किसानों व पशुपालकों की सामाजिक व आर्थिक स्थिति के उत्थान में महत्वपूर्ण कारक माना जाता है। पशुपालन भारतीय अर्थव्यवस्था में 5.2 प्रतिशत की भागीदारी रखता है। भारत में पशुधन की संख्या विश्व के पशुओं की आबादी का लगभग 11.6 प्रतिशत है। पशुधन क्षेत्र से लगभग आठ प्रतिशत आबादी को रोजगार प्राप्त होता है। अतः मनुष्यों का जीवन बहुत हद तक पशुओं पर निर्भर है। इसलिये पशुओं और मनुष्यों के बीच सन्तुलन होना बहुत आवश्यक है क्योंकि यह खाद्य श्रृंखला और पारिस्थितिकी तंत्र के लिए बेहद महत्वपूर्ण है। बढ़ती आबादी की संतुलित आहार पूर्ति के लिए पशुपालन क्षेत्र को अधिक कुशल व विकसित करने की आवश्यकता है। मनुष्य और पशुओं के बीच की इस परस्पर निर्भरता के प्रति लोगों में जागरूकता बढ़ाने के लिए हर वर्ष 04 अक्टूबर को विश्व पशु दिवस मनाया जाता है तथा यह दिन विश्वभर में पशुओं के कल्याण के लिए जागरूकता बढ़ाने के लिए समर्पित है। यह पशुओं के अधिकारों व कल्याण के लिए कार्यवाही का एक अन्तर्राष्ट्रीय दिन है जो हर वर्ष पशुओं के संरक्षक संत फोसिस ऑफ असीसी के पर्व पर मनाया जाता है। विश्व पशु दिवस हर वर्ष अलग-अलग थीम पर मनाया जाता है। इस वर्ष का थीम "ग्रेट या स्मॉल, लव दैम ऑल" है। इस वर्ष विश्व पशु दिवस का मिशन विश्वभर में कल्याण मानकों में सुधार के लिए पशुओं की स्थिति को ऊपर उठाना है। 24 मार्च, 1925 को जर्मनी के बर्लिन में पहला विश्व पशु दिवस सिनोलोजिस्ट एवं पशु कल्याण कार्यकर्ता हैनरिक जिमरमैन के द्वारा मनाया गया था तथा 1931 में इटली में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय पशु संरक्षण सम्मेलन में विश्व पशु दिवस को 4 अक्टूबर को मनाने का प्रस्ताव पारित किया था। विश्व पशु दिवस मनाने का मूल उद्देश्य विलुप्त हो रहे पशुओं की रक्षा करने के साथ-साथ मनुष्यों और पशुओं के सम्बन्धों को मजबूत करना है। पशुओं के प्रति क्रूरता को समाप्त करना है। जैसा मनुष्यों को जीने का अधिकार दिया है वैसे ही पशुओं को भी जीवन का अधिकार दिया गया है। पशु हमारे इको सिस्टम का महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिसके माध्यम से इको सिस्टम में संतुलन बना रहता है। पशु अधिकार संगठनों, व्यक्तियों और सामुदायिक समूहों द्वारा विभिन्न कार्यक्रम आयोजित कर पशुओं के अधिकारों व कल्याण के प्रति जागरूक करना चाहिए। विश्वविद्यालय को भी अपने विभिन्न संगठक महाविद्यालयों, कृषि विज्ञान केन्द्र तथा पशु विज्ञान केन्द्रों के माध्यम से विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से किसानों व पशुपालकों को पशुओं के अधिकारों तथा कल्याण के प्रति प्रत्येक नागरिक को जागरूक करना चाहिए।

आप सभी को विश्व पशु दिवस की शुभकामनाएं।

प्रो. (डॉ.) सतीश कुमार गर्ग



किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

—महात्मा गांधी



विश्वविद्यालय समाचार

राजस्थान मिशन 2030 अभियान के तहत जागरूकता कार्यक्रम

पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर में राज्य सरकार के मिशन 2030 हेतु रूपरेखा बनाने बाबत सुझावों के आमन्त्रण हेतु कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग की अध्यक्षता में 6 सितम्बर को विश्वविद्यालय के डीन-डायरेक्टर्स के साथ मीटिंग का आयोजन किया गया। प्रो. गर्ग ने बताया कि आगामी 7 वर्षों में राज्य के विकास हेतु राज्य सरकार द्वारा मिशन 2030 के तहत विभिन्न विभागों से सुझाव आमन्त्रित किये जा रहे हैं। वेटेनरी विश्वविद्यालय द्वारा शिक्षा, अनुसंधान एवं प्रसार के क्षेत्र में आगामी 7 वर्षों के लिए सम्भावी विकास कार्य योजनाओं को बनाया जायेगा। इनमें प्रमुखतः विश्वविद्यालय के अन्तर्गत फिशरीज महाविद्यालय को खोलना, युवाओं एवं पशुचिकित्सकों हेतु कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रमों को बढ़ावा देना, पोल्ट्री सेक्टर का विकास, डेयरी फार्मों को मॉडल डेयरी फार्म के रूप में विकसित करना, पशुचिकित्सा एवं रोग निदान हेतु सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल का विकास, डेयरी एवं खाद्य प्रौद्योगिकी में उच्च शिक्षा पाठ्यक्रमों को शुरू करना आदि मुद्दे शामिल रहेंगे। पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर में 11 सितम्बर को मिशन 2030 अभियान के तहत विद्यार्थियों और कर्मचारियों को जागरूक करने हेतु संवेदना कार्यक्रम आयोजित किया गया। अधिष्ठाता प्रो. ए.पी. सिंह ने विद्यार्थियों को राजस्थान मिशन 2030 के बारे में विस्तार से बताया एवं अपने सुझाव देने हेतु प्रेरित किया। इसी क्रम में छात्रों में निबंध प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया। अधिष्ठाता, डेयरी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय प्रो. हेमंत दाधीच ने छात्रों को राजस्थान मिशन 2030 के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की।



प्रबंध मण्डल की 32वीं बैठक का आयोजन

वेटेनरी विश्वविद्यालय की 32वीं प्रबंध मण्डल की बैठक 14 सितम्बर को कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक में विभिन्न शैक्षणिक मुद्दों पर चर्चा कर अनुमोदन किया गया। विश्वविद्यालय के शिक्षकों एवं अन्य शैक्षणिक कर्मचारियों की नियुक्ति हेतु न्यूनतम अर्हता तथा उच्चतर शिक्षा मानकों के रखरखाव हेतु यू.जी.सी. विनियम 2018 के मुख्य विनियमों में संशोधित प्रावधान विनियम 2023 को अपनाने का अनुमोदन किया गया। प्रबंध मण्डल ने विश्वविद्यालय के संघटक द्विवर्षिय पशुपालन डिप्लामो संस्थान बोजूदा (चित्तौड़गढ़), नोहर (हनुमानगढ़) एवं चांदन (जैसलमेर) में विद्यार्थियों के प्रवेश सीटे 50 से बढ़ाकर 100 करने के प्रस्ताव का अनुमोदन किया है। विश्वविद्यालय से सम्बद्ध प्राइवेट वेटेनरी कॉलेजों की सम्बद्धता के विस्तार का भी अनुमोदन किया गया। बैठक में वेटेनरी विश्वविद्यालय से सम्बद्ध प्राइवेट वेटेनरी महाविद्यालयों हेतु निरीक्षण एवं सम्बद्धता शुल्क को बढ़ाने तथा कर्मचारी कल्याण योजना-2012 के अन्तर्गत शैक्षणोत्तर कर्मचारियों को मिलने वाले वेलफेयर लोन की सीमा 10 लाख से बढ़ाकर 15 लाख करने का भी अनुमोदन किया गया। बैठक में प्रबंध मण्डल एवं अकादमिक परिषद् की गत बैठक की पालना रिपोर्ट का अनुमोदन किया गया। विश्वविद्यालय की कुलसचिव बिन्दु खत्री ने बैठक में एजेण्डे प्रस्तुत किये। बैठक में प्रबंध मण्डल के माननीय सदस्य प्रो. ए.के. गहलोत, प्रो. रुद्र प्रताप पाण्डे, डॉ. अमित नैन, प्रो. जे.बी. फोगाट, श्रीमती कृष्णा सोलंकी, श्री बी.एल. सर्वा, प्रो. ए.पी. सिंह, प्रो. राजेश कुमार धूड़िया, डॉ. एस.पी. जोशी, डॉ. गीता बेनीवाल एवं डॉ. दीवान सिंह उपस्थित रहे।



श्वानों में रेबीज निरोधक टीकाकरण शिविर

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर में कैनाइन वेलफेयर सोसाइटी बीकानेर के सहयोग से विश्व रेबीज दिवस के उपलक्ष में 28 सितम्बर को एक दिवसीय रेबीज टीकाकरण शिविर आयोजित किया गया। कार्यकारी अधिष्ठाता प्रो. हेमन्त दाधीच, वेटेनरी कॉलेज, बीकानेर ने बताया कि कुल 62 पालतू श्वानों को निःशुल्क रेबीज निरोधक टीके लगाए गये तथा श्वान पालकों को रेबीज रोक की रोकथाम हेतु भी परामर्श दिया गया। प्रो. दाधीच ने बताया कि मनुष्य में अधिकांश रेबीज के मामले श्वानों के काटने से आते हैं। रेबीज रोग के प्रति आमजन में पूर्ण जानकारी के अभाव के कारण इसको पूर्ण नियंत्रित कर पाना मुश्किल है। श्वानों में रेबीज प्रतिरोधक टीकों के माध्यम से हम मनुष्य एवं अन्य पशुओं में रेबीज के फैलाव को रोक सकते हैं। इस शिविर के आयोजन में डॉ. तारा चन्द एवं इंर्टन विद्यार्थियों का सहयोग रहा।





पशु जैवचिकित्सा अपशिष्ट निस्तारण पर जागरूकता कार्यक्रम

वेटरनरी विश्वविद्यालय के जैव चिकित्सा अपशिष्ट निस्तारण एवं प्रौद्योगिकी केंद्र, राजुवास द्वारा 29 सितम्बर को राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय करमीसर, बीकानेर में एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। पशु जैव चिकित्सा अपशिष्ट निस्तारण एवं प्रौद्योगिकी केंद्र की मुख्य अन्वेषक डॉ. दीपिका धूड़िया ने बताया कि आमजन को जैवचिकित्सकीय अपशिष्ट के उचित निस्तारण एवं प्रबंधन का ज्ञान होना अति आवश्यक है जिससे वो स्वयं को एवं दूसरों को भी संक्रामक रोगों से बचा सके। केन्द्र के प्रोजेक्ट एसोसिएट डॉ. देवेन्द्र चौधरी ने जैवचिकित्सकीय अपशिष्ट का मानव स्वास्थ्य एवं वातावरण पर होने वाले दुष्प्रभावों से विद्यार्थियों को अवगत करवाया तथा रेबीज रोग से बचाव की जानकारी प्रदान की। जागरूकता कार्यक्रम के दौरान डॉ. रणवीर गोदारा, भास्कर वैष्णव, विद्यालय की प्रधानाध्यापिका रीना कच्छावा, राजीव लोचन व्यास एवं अन्य शिक्षकगण उपस्थित रहे।



यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पॉसिबिलिटी

गांव गाढ़वाला में कौशल विकास संगोष्ठी

वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पॉसिबिलिटी के अंतर्गत गोद लिए गांव गाढ़वाला में 30 सितम्बर को वरिष्ठ उपाध्याय संस्कृत विद्यालय में कौशल विकास संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पॉसिबिलिटी के समन्वयक डॉ. नीरज कुमार शर्मा ने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि कौशल का व्यक्ति के जीवन के हर क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका है। यदि व्यक्ति को ज्ञान है और कौशल का अभाव है तो वह अपनी क्षमताओं का पूर्ण उपयोग नहीं कर सकता। कौशल विकास जीविकोपार्जन का अहम हिस्सा है अतः राज्य एवं केन्द्र सरकार भी युवाओं में कौशल विकास को बढ़ावा दे रही है। इस अवसर पर विद्यालय के प्रधानाध्यापक ताराचंद, शिक्षक दिनेश चन्द्र सहित समस्त स्टाफ उपस्थित थे।



सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान-अक्टूबर, 2023

पशु रोग	पशु	अत्यधिक संभावना	अधिक संभावना	बहुत कम संभावना
ब्लूटंग रोग	भेड़	—	—	अलवर, बाड़मेर, भरतपुर, बांसवाड़ा, बीकानेर, बूंदी, जैसलमेर, जालौर, जोधपुर, नागौर, पाली
बबेसिओसिस	गाय, भैंस	—	—	अलवर, भरतपुर, बीकानेर, बूंदी, धौलपुर, गंगानगर, हनुमानगढ़, जयपुर, जालौर, प्रतापगढ़
एन्टेरोटोक्सिमिया	भेड़, बकरी	जोधपुर	—	—
फेसिओलोसिस	गाय, भैंस, भेड़, बकरी	—	—	गंगानगर
खुरपका मुंहपका रोग	गाय, भैंस, भेड़, बकरी	उदयपुर	—	बीकानेर, बूंदी
गलघोंटू रोग	गाय, भैंस,	—	—	अलवर, बांसवाड़ा, डूंगरपुर, उदयपुर
पी.पी.आर.	भेड़, बकरी	जयपुर, पाली	टोंक	अलवर, बांसवाड़ा, बाड़मेर, बीकानेर, चूरू, डूंगरपुर, जैसलमेर, जालौर, झुंझुनू, झालावाड़, जोधपुर, नागौर, राजसमन्द, प्रतापगढ़, सीकर, उदयपुर
भेड़ एवं बकरी माता रोग	भेड़, बकरी	झुंझुनू	—	—
ट्रीपोनोसोमियोसिस	गाय, भैंस, भेड़, बकरी	—	—	राज्य के अधिकांश जिले
थीलेरिओसिस	गाय	—	—	अलवर, बांसवाड़ा, बूंदी, झालावाड़, करोली, प्रतापगढ़, उदयपुर

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. ए.पी. सिंह, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर एवं डॉ. जे.पी. कछावा, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर। फोन— 0151-2543419, 2544243, 2201183, टोल फ्री नम्बर 18001806224



पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरु)

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरु) द्वारा 6, 8, 11, 12, 13, 14, 15 एवं 18 सितम्बर को गांव मेहरी राजवियान, बिलुबास रामपुरा, बोधेरा, ढाणी तेतरवाल, बासड़ा, कोहिना, गलघटी एवं देववानियां गांवों में तथा 16 एवं 30 सितम्बर को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 203 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा 11, 13, 16, 23 एवं 26 सितम्बर को गांव खेड़ली महाद्वीप, केथौड़ी, चार, जालखेड़ा एवं पारलिया में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 131 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर द्वारा 2, 4 एवं 11 सितम्बर को गांव माणकलाव, तिवरी एवं आगोलाई गांवों में तथा दिनांक 22 एवं 26 सितम्बर को आयोजित ऑनलाइन एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 129 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर)

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़ द्वारा 8, 11, 14, 19, 28 सितम्बर को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविर एवं 21-22 सितम्बर को आत्मा योजनान्तर्गत आयोजित दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 199 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर)

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा दिनांक 6, 11, 22, 26 एवं 27 सितम्बर को गांव सेह, जरहरा, अऊ, गढ़ी एवं कठेरा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 86 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 5, 8, 11, 15, 18, 22 एवं 29 सितम्बर को गांव नसीलपुर, गुर्जा, जागीरपुरा कलां, नैनोखर, फराकपुर, उमराए एवं मलिकपुर गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में कुल 202 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं द्वारा 12, 15 एवं 21 सितम्बर को एक दिवसीय ऑनलाइन एवं 8, 11 एवं 18 सितम्बर को गांव कुमास, बड़वासी एवं जयसिंहपुरा में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों से 143 पशुपालक एवं कृषक लाभान्वित हुए।

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजूंदा

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजूंदा (चित्तौड़गढ़) द्वारा 11, 13, 16 एवं 30 सितम्बर को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 130 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर)

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा 11 एवं 14 सितम्बर को एक दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर 12 एवं 27 सितम्बर को केन्द्र परिसर में तथा दिनांक 16 एवं 26 सितम्बर को गांव लखासर एवं बामनवाली में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 174 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरौही

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरौही द्वारा 5, 11, 16 एवं 27 सितम्बर को गांव सिन्दरथ, माकरोडा, उडवारिया एवं घान्ता गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 349 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया (नागौर)

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया (नागौर) द्वारा 6, 8, 11, 14, 18, 23 एवं 26 सितम्बर को गांव सारडी, धोलिया, सांवरदा, लेडी, सिंघाणा, शिमला एवं मिझासरी गांवों में तथा दिनांक 27 एवं 29 सितम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 169 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा 13, 15, 18, 20 एवं 22 सितम्बर को गांव गैन्जी, चीतरी, नादा फलां, वगत फलां एवं नवल श्याम गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 150 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर (जयपुर) द्वारा 12, 16, 19, 20, 22, 23, 26 एवं 30 सितम्बर को गांव अकोडा, अखेपुरा, बाबेर वालो की ढाणी, नरेना, बगावास, भागपुरा, कालवाड़ एवं चैनपुरा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 147 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जालौर

पशु विज्ञान केन्द्र, जालौर द्वारा 1 एवं 11 सितम्बर को गांव मान्डोली एवं रामसीन गांवों में तथा 4 एवं 16 सितम्बर को ऑनलाइन एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 115 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा 2-5, 11-14, 15-21 एवं 26-27 सितम्बर को केन्द्र परिसर में दो दिवसीय चार दिवसीय, सात दिवसीय तथा 29 एवं 30 सितम्बर को गांव दीपलना एवं चक 23 एनटीआर में एक दिवसीय कृषक एवं पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 291 किसानों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।





पशुओं से मनुष्यों में फैलता है निपाह वायरस

देश में कोरोना महामारी के बाद कुछ राज्यों में निपाह वायरस ने दस्तक दे दी है जो कि एक प्रकार का जानलेवा वायरस है जो पशुओं से मनुष्यों में संक्रमण फैलाता है। यह वायरस ज्यादातर चमगादड़ (फ्लूट बैट्स) के जरिये फैलता है लेकिन इसके अलावा ये वायरस सूअर, घोड़े, बकरी, कुत्ते, बिल्लियों से भी फैल सकता है। यह घातक बीमारी पटरोपस जीनस के फ्लूट बैट अथवा पलाइंग फोक्स के माध्यम से फैलती है जो निपाह और हेंड्रा वायरस के प्राकृतिक स्रोत है।

मनुष्यों में निपाह वायरस का संक्रमण पहली बार वर्ष 1998 में मलेशिया में तथा वर्ष 1999 में सिंगापुर में रिपोर्ट किया गया था। इस वायरस का नाम मलेशिया के उसी गांव के नाम पर रखा गया है जहां के एक व्यक्ति में इसका वायरस सबसे पहले आया था तथा उस व्यक्ति की इस बीमारी से मौत हो गयी थी। यह जुनोटिक वायरस पैरामिक्सोविरिडी कैमिली के हेनिपा वायरस जीनस से संबंध रखता है। यह वायरस चमगादड़ के मल, लार व जन्म के समय तरल पदार्थों में मौजूद होता है। इसके अलावा यह संक्रमण दूषित भोजन के सेवन करने से तथा संक्रमित व्यक्ति के सम्पर्क में आने से भी आसानी से फैलता है तथा संक्रमित व्यक्ति के खांसने तथा छीकने से भी यह संक्रमण फैलता है, यही वजह है कि यह वायरस एक प्रकार का वायुजनित अर्थात् एयरबार्न संक्रामक जूनोटिक रोग है।

लक्षण : मनुष्यों में इस घातक जूनोटिक बीमारी के लक्षण 5 से 14 दिन के भीतर दिख सकते हैं जैसे कि बुखार, बहुत ज्यादा कमजोरी आना, सिरदर्द, उल्टी-दस्त, खांसी (गले में खराश), सांस लेने में दिक्कत, मांसपेशियों में दर्द, एटिपिकल निमोनिया इत्यादि। अगर बीमारी ज्यादा गंभीर रूप ले ले तो संक्रमित व्यक्ति को दिमाग का बुखार हो जाता है, जिसकी वजह से व्यक्ति 24 से 48 घण्टे के भीतर व्यक्ति कोमा में जा सकता है। सही समय पर उपचार ना मिलने की वजह से व्यक्ति की मृत्यु भी हो जाती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार निपाह वायरस संक्रमण में मृत्यु दर 40 से 70 प्रतिशत तक रहती है।

निदान : संक्रमित व्यक्ति के द्वारा तुरंत चिकित्सक की सलाह लेकर आर.टी.पी.सी.आर जांच करवाया जाना चाहिए। इसके अलावा सीरम न्यूट्रिलाइजेशन जांच तथा एलाइजा जांच के जरिये इस वायरस की पहचान की जा सकती है।

उपचार : निपाह वायरस के उपचार के लिए कोई दवा या वैक्सीन मौजूद नहीं है। इसलिए लक्षणों के आधार पर चिकित्सकीय सलाह लेकर उपचार करवाना चाहिए।

बचाव :

- साबुन और पानी से अपने हाथों को बार-बार धोएं।
- बीमार सूअरों एवं चमगादड़ों के सम्पर्क में आने से बचे।
- सूअर फार्म को साफ सुथरा रखें तथा सैनिटाइज करते रहें।
- खाना ताजा तथा स्वच्छ खाँए व खाँए हुए अथवा जमीन पर गिरे हुए फलों को छूने से बचें।
- वायरस से पीड़ित व्यक्ति के लार, खून एव अन्य शारीरिक तरल पदार्थों के सम्पर्क से बचे।

निपाह वायरस से संक्रमित व्यक्ति की देखभाल करते समय पीपीई किट का इस्तेमाल करें व पूर्ण सावधानी बरतें।

डॉ. दीपिका धूड़िया

सहायक प्राध्यापक, वेटेनरी कॉलेज, बीकानेर

सफलता की कहानी

श्री कालूलाल गुर्जर ने

पशुपालन को दिया व्यवसाय का रूप

कोटा जिले के तहसील लाड़पुरा के ग्राम रंगपुर के प्रगतिशील पशुपालक श्री कालूलाल गुर्जर पशुपालन को कई वर्षों से करते आ रहे हैं। इनके पास आठ बीघा कृषि भूमि है शुरूआत में इनके पास पांच पशु थे लेकिन इनकी रुचि पशुपालन को एक व्यवसाय के रूप में अपनाने की थी। वर्तमान में अपने परिवार के साथ पशुपालन व्यवसाय को यर्थात् के धरातल पर सफलतापूर्वक अपनाते हुए कुल 36 पशुओं के साथ पशुपालन को एक सफल व्यवसाय के रूप में आगे बढ़ा रहे हैं। इनके पास 10 भैंसे (मुर्दा नस्ल) और 15 गायें (गिर, हॉलिस्टन व जर्सी क्रॉस) हैं एवं 11 छोटे पशु हैं। इनके यहां प्रतिदिन लगभग 90 लीटर दुग्ध उत्पादन होता है। इनकी पशुपालन से वार्षिक आय लगभग सात लाख रुपये तक हो जाती है। इन्होंने पशुओं के लिए पक्की पशुशाला भी बना रखी है जिसमें टीनशेड व पंखों की सुविधा भी उपलब्ध है। पशुओं के लिए हरा चारा वर्षभर सामान्यतः उपलब्ध रहता है एवं चारा कुट्टी करने हेतु बिजली चलित चॉफ कटर का उपयोग करते हैं। इन्होंने मुर्दा नस्ल का उन्नत पाडा भी रखा है एवं गायों में सिर्फ कृत्रिम गर्भाधान तकनीक को ही अपनाते हैं। पशुओं में होने वाली संक्रामक बीमारियों से अपने पशुओं को बचाने के लिए हर छः माह में टीकाकरण भी करवाते हैं। प्राथमिक पशुचिकित्सा हेतु दवाइयां अपने पास रखते हैं जिनका उपयोग पशुचिकित्सक की सलाह से स्वयं कर लेते हैं एवं आवश्यक होने पर पशुचिकित्सक की सेवाएं भी लेते हैं। पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा रंगपुर गांव को मेरा गांव मेरा गौरव योजनांतर्गत अपनाया हुआ है केन्द्र द्वारा रंगपुर में आयोजित होने वाली विभिन्न प्रसार गतिविधियों में इन्होंने अपनी भागीदारी निभाई है। ये कृमिनाशक दवा, खनिज लवण मिश्रण, टीकाकरण, पशुओं में नस्ल सुधार हेतु कृत्रिम गर्भाधान तकनीक एवं संतुलित पशु आहार आदि को पशुओं के लिए उपयोग में लेते हैं। ये पशुधन उत्पादन की विभिन्न उन्नत तकनीकों जैसे यूरिया उपचारित भूसा, अजोला, यूरिया मोलासेस मिनरल ब्लॉक, स्वनिर्मित संतुलित पशु आहार आदि को भी अपनाने की इच्छा रखते हैं। श्री कालूलाल के परिवार में दूध संकलन केन्द्र भी संचालित हो रहा है। अपने पशुओं द्वारा उत्पादित दूध के साथ-साथ अन्य पशुपालकों से भी दूध संकलित करते हैं। पशुपालन को अपनाने से आर्थिक रूप से सुदृढ़ होने के साथ-साथ आत्मनिर्भरता का जीवन जी रहे हैं एवं निकट भविष्य में इसे ओर भी वृहद्ध स्तर पर व्यवसायिक रूप से अपनाने की इच्छा रखते हैं। श्री कालूलाल अपनी सफलता का श्रेय अपने परिवार के सदस्यों के साथ-साथ पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा को भी देते हैं।



सम्पर्क- कालूलाल गुर्जर

निवासी-रंगपुर, तहसील-लाड़पुरा, जिला कोटा (मो. 9799748016)

बैकयार्ड पोल्ट्री फार्मिंग के माध्यम से ग्रामीण उद्यमिता

घर के पिछवाड़े (बैकयार्ड) में छोटे स्तर पर मुर्गियों को घरेलू श्रम और स्थानीय उपलब्ध दाना-पानी का उपयोग करते हुए बिना किसी विशेष आर्थिक व्यय के पालन पोषण को बैकयार्ड कुक्कुट पालन कहते हैं। कुक्कुट पालन आर्थिक रूप से पिछड़े हुए लोगों को आर्थिक स्वावलंबन दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। शुरुआत से ही भारत में बैकयार्ड मुर्गी पालन ग्रामीण निवासियों की घरेलू और सांस्कृतिक जरूरतों को पूरा करने में महत्वपूर्ण रही है। इस देश के 50 प्रतिशत से अधिक निवासी अपने प्रोटीन की मुख्य आपूर्ति और आय के द्वितीयक स्रोत के रूप में पारंपरिक ग्रामीण मुर्गीपालन पर निर्भर हैं। हालांकि व्यावसायीकरण ने इस उद्योग को नुकसान पहुंचाया है। वास्तव में प्रत्येक घर पिछवाड़े में 5 से 10 मुर्गियां पालता है। इस कृषि पद्धति के लिए मुख्य चुनौतियों में शिकारी हमले, उपयुक्त जर्मप्लाज्म की कमी और बीमारियों की एक उच्च घटना शामिल थी। भारत में लगभग 75 प्रतिशत असंगठित क्षेत्र के योगदान की तुलना में, संगठित या वाणिज्यिक पोल्ट्री क्षेत्र देश के कुल मांस और अंडे के उत्पादन में 25 प्रतिशत का योगदान देता है। भारत सरकार की 20वीं पशुधन गणना, 2019 में कुल मिलाकर 851.81 मिलियन कुक्कुट थे, जिसमें पिछली जनगणना की तुलना में 16.8 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। (317.07 मिलियन बैकयार्ड कुक्कुट सहित, जिसमें पिछले पशुधन जनगणना की तुलना में 45.8 प्रतिशत की वृद्धि हुई है)।

पिछवाड़े/बैकयार्ड मुर्गी पालन की शुरुआत : 20 से 30 देसी मुर्गियों से इस व्यवसाय को शुरू कर सकते हैं। इन मुर्गियों के 1 दिन के चूजों की कीमत लगभग 30 से 60 रुपये तक हो सकती है। देसी मुर्गियों में अंडे सेने का गुण होता है। जिसका लाभ यह होता है कि किसानों को बार-बार चूजे खरीदने की आवश्यकता नहीं पड़ती है। देसी मुर्गी साल में 160 से 180 अंडे देती है जिनका बाजार में मूल्य अधिक होता है। देसी मुर्गी के अंडे की मांग भी बहुत ज्यादा है। आजकल इनको जैविक अंडा के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है। इसकी कीमत आमतौर पर साधारण अंडे के मुकाबले ज्यादा होती है और इसकी मार्केटिंग में कोई परेशानी नहीं होती है।

पिछवाड़े/बैकयार्ड कुक्कुट फार्मिंग के फायदे :

- अधिक वित्तीय लाभ के साथ कम प्रारंभिक निवेश।
- शेष रसोई और कृषि अपशिष्ट का उपयोग मुर्गियों को खिलाने के लिए किया जा सकता है।
- स्थानीय बाजार में अंडे और मुर्गे बेच सकते हैं।
- पिछवाड़े (बैकयार्ड) में कुक्कुट पालन एक एटीएम के रूप में कार्य करता है क्योंकि मुर्गियों और अंडों को परिवार की जरूरतों के आधार पर जब भी और जहां भी नकदी की आवश्यकता होती है बेचा जा सकता है।
- बंजर भूमि का भी बैकयार्ड मुर्गी पालन करने में उपयोग में ले सकते हैं जिससे बंजर भूमि को उपजाऊ बनाया जा सकता है।
- पोषक तत्वों से भरपूर अंडा प्रोटीन का सबसे अच्छा स्रोत है जो घर परिवार पोषण स्तर में भी सुधार करता है।
- बिना नौकरी वाली महिलाएं पिछवाड़े (बैकयार्ड) की कृषि प्रणाली में भाग ले सकती हैं।
- मुर्गियों को जैविक खेती के तरीकों का उपयोग करके पाला जाता है और प्राकृतिक चारे के साथ कम तनावपूर्ण वातावरण में रखा जाता है जिससे उनके मांस और अंडों की गुणवत्ता अधिक होती है।

स्वदेशी बैकयार्ड कुक्कुट की सीमाएं :

- धीमा विस्तार
- हल्का वजन
- देर से यौन विकास
- सीमित अंडा उत्पादन
- छोटे आकार का अंडा
- लगातार उतावलापन

आवास प्रबंधन : बैकयार्ड कुक्कुट फार्मिंग के लिए फैंसी आवास की आवश्यकता नहीं होती है लेकिन मुर्गियों को धूप बारिश और शिकारियों से बचाना चाहिए। एक फ्री रेंज सिस्टम में मुर्गियों को दिन के दौरान अपने दम पर चारे के लिए छोड़ दिया जाता है और रात में एक शेड में रखा जाता है। बेहतर उत्पादन प्रदर्शन के लिए कुछ मानदंड जिन पर विचार किया जा सकता है वे हैं—

- गर्मियों में हवा और ठंड के तनाव से बचाव के लिए और सर्दियों में सीधी धूप पाने के लिए मुर्गे का घर पूर्व-पश्चिम दिशा की ओर होना चाहिए।
- मुर्गियों पर गर्मी के तनाव को कम करने के लिए सीधी धूप से बचना चाहिए।
- छप्पर घास बांस और लकड़ी सहित कम लागत वाली निर्माण सामग्री का उपयोग किया जा सकता है।
- कुक्कुट हाउस के अंदर कोई गीलापन या रिसाव नहीं होना चाहिए।

- फर्श एक ऊंचे क्षेत्र में या जमीन के स्तर से कम से कम दो फीट ऊपर होना चाहिए जो दरारों से मुक्त साफ करने में आसान चूहा प्रतिरोधी और टिकाऊ होना चाहिए।
- शेड के अंदर गैस के विकास को रोकने के लिए शेड के ऊपरी हिस्से में खुली हवा का प्रवाह होना चाहिए।
- एक कुक्कुट हाउस की साइड की दीवारें (दोनों तरफ ढलान के साथ) आमतौर पर 7 से 8 फीट की ऊंचाई के बीच होती हैं जबकि केंद्र की ऊंचाई 9 से 12 फीट के बीच होती है।
- छत के लिए सामग्री जैसे छप्पर टाइलें एसबेस्टस आदि।
- बैकयार्ड मुर्गीपालन में एक ही स्थान पर कई आयु समूहों के मुर्गियों का पालन पोषण किया जाता है जिससे रोग नियंत्रण लगभग असंभव हो जाता है। इससे वचाव के लिए मेलाथियान (2-5 प्रतिशत) या डी.डी.टी. (1-5) प्रयोग मिटटी में मिलाकर करना चाहिए।
- बैकयार्ड मुर्गियों अन्तः परजीवी के संक्रमण का भी काफी खतरा बना रहता है इससे बचाव के लिए एल्डेनडाजोल (5 मिली ग्राम धकिलोग्राम शारीरिक भार या पाइपराजीन (50-100 मिलीग्राम/पक्षी) पीने के पानी के साथ देनी चाहिए।

आहार प्रबंधन : कुक्कुट उत्पादन की कुल लागत का 70 प्रतिशत अकेले चारे पर खर्च किया जाता है। पिछवाड़े के कुक्कुट उत्पादन में फीड की लागत न्यूनतम मानी जाती है। इसलिए मुर्गियों को खुले यार्ड में सफाई करने और कीड़े, घोंघे, दीमक घास और खरपतवार के बीज, बचे हुए अनाज, फसल के बचे हुए और घरेलू कचरे से आवश्यक प्रोटीन, ऊर्जा, खनिज और विटामिन प्राप्त करने की अनुमति दी जाती है। पक्षियों को टूटे हुए चावल, मूंगफली के पुआल, गेहूँ दाने चावल की फली आदि जैसी चीजें भी खिलाई जा सकती हैं। बरसात के मौसम में फंगस की वृद्धि को रोकने के लिए मुर्गियों के आहार को 1.5 महीने से अधिक समय तक भंडारण में नहीं रखना चाहिए। बैकयार्ड मुर्गी पालन में प्रतिदिन मुर्गियों को दिन में दो बार आहार एक बार सुबह और एक बार शाम दिया जाना चाहिए। अन्न पात्रों को ब्रुडिंग अवधि के दौरान 2 से 7 सेमी कमरे की आवश्यकता होती है जबकि बढ़ती उम्र की अवधि के दौरान 10 से 15 सेमी और अंडे देने की अवधि में 12 से 15 सेमी प्रति मुर्गी की आवश्यकता होती है। ब्रुडिंग अवधि, उम्र बढ़ते की अवधि और अंडे देने की अवधि के दौरान पानी की दूरी क्रमशः 0.5 से 1.5 सेमी, 1.5 से 2.5 सेमी और 2.5 सेमी तक होनी चाहिए। बेहतर प्रदर्शन के लिए मुर्गियों को प्रति दिन 30 से 60 ग्राम प्रति मुर्गी की दर से अतिरिक्त सांद्र राशन दिया जाता है। संतुलित राशन के लिए सही मात्रा में मक्का चावल की पॉलिश, गेहूँ का चोकर, मूंगफली की खली, मछली का भोजन, शेल ग्रेट, चूना पत्थर, नमक, खनिज और विटामिन जाता है या इसे आसानी से उपलब्ध वस्तुओं से बनाया जा सकता है। मुर्गी आहार में प्रोटीन की मात्रा स्टार्टर (प्रारंभक) में कम से कम 20 प्रतिशत, उत्पादक में 16 प्रतिशत और अंडे देने की अवधि में 18 प्रतिशत जबकि ऊर्जा स्तर (चयापचय ऊर्जा) स्टार्टर के लिए 2800 किलो कैलोरी किग्रा, उत्पादक के लिए 2600 किलो कैलोरी किग्रा और अंडे देने की अवधि के लिए 2650 किलो कैलोरी किग्रा होनी चाहिए।

स्वास्थ्य प्रबंधन : बैकयार्ड कुक्कुट पालन में मुर्गियों को बेहतर स्वास्थ्य देखभाल के लिए वायरस की बीमारियों के खिलाफ समय पर टीकाकरण करना चाहिए। रानीखेत रोग, मरेक्स रोग, गम्बोरो रोग आदि ऐसे रोग हैं जो मुख्य रूप से मुर्गियों को प्रभावित करते हैं। एक मुर्गी फार्म में, एक नियमित टीकाकरण कार्यक्रम का पालन किया जा सकता है। (तालिका 1) एक स्वस्थ झुण्ड के लिए, आंतरिक और बाह्य दोनों परजीवियों के लिए कृमिनाशक का प्रयोग किया जाना चाहिए। 12 सप्ताह की आयु के बाद हर 6 महीने में रानीखेत रोग टीकाकरण दोहराया जाना चाहिए। पिछवाड़े (बैकयार्ड) की खेती में पाले गए मुर्गियों के अंडे और मांस शहरी क्षेत्रों में भी उच्च उपभोक्ता स्वीकार्यता के कारण उच्च प्रीमियम प्राप्त करते हैं जहां वाणिज्यिक इकाइयों से बहुत सारे अंडे और मुर्गी का मांस उपलब्ध होता है। उच्च गुणवत्ता वाले पशु भोजन की स्थिर आपूर्ति के अलावा घर के पीछे मुर्गी पालन उत्पादन विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में कमजोर वर्गों के लिए आय के अवसरों को बढ़ावा देता है। बैकयार्ड मुर्गीपालन निश्चित रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकांश परिवारों की आर्थिक स्थिति में सुधार करने में उपयोगी है। बैकयार्ड मुर्गीपालन कई प्रकार के कार्यों को पूरा करती है जैसे कि मांस और अंडे का प्रावधान, कीट नियंत्रण, न्यूनतम निवेश का इस्तेमाल और कम पर्यावरण प्रदूषण इत्यादि।

डॉ. लोकेन्द्र एवं मनीषा दुत

पशुचिकित्सा विज्ञान और पशुपालन महाविद्यालय, जूनागढ़, गुजरात एवं वेटरनरी कॉलेज, राजुवास, बीकानेर

गाजर घास : प्रभाव एवं नियंत्रण

गाजर घास या 'चटक चांदनी' पार्थेनियम हिस्टेरोफोरस जिसे आमतौर पर भारत में गाजर घास, सफेद शीर्ष या कांग्रेस घास के रूप में जाना जाता है, (एस्टरकेकंपोजिटार्ड) परिवार से संबंधित एक शाकाहारी, सीधा और वार्षिक पौधा है। गाजर के पौधे की तरह दिखने के कारण इसे गाजर घास के नाम से जाना जाता है जो बड़े आक्रामक तरीके से फैलती है। यह एवर्सीय शाकीय पौधा है जो हर तरह के वातावरण में तेजी से उगकर फसलों के साथ-साथ मनुष्य और पशुओं के लिए भी गंभीर समस्या बन जाता है।

कैसे पहचाने :

- ❖ इस खरपतवार की बीस प्रजातियां पूरे विश्व में पाई जाती हैं।
- ❖ एक से डेढ़ मीटर तक लम्बी गाजर घास के पौधे का तना रोयेदार अत्यधिक शाखा युक्त होता है।
- ❖ इसकी पत्तियां असामान्य रूप से गाजर की पत्ती की तरह होती हैं।
- ❖ इसके फलों का रंग सफेद होता है।
- ❖ प्रत्येक पौधा 1000 से 5000 अत्यंत सूक्ष्म बीज पैदा करता है, जो शीघ्र ही जमीन पर गिरने के बाद प्रकाश और अंधकार में नमी पाकर अंकुरित हो जाते हैं।
- ❖ यह पौधा 3-4 माह में ही अपना जीवन चक्र पूरा कर लेता है और वर्षभर उगता और फलता फूलता है। यह हर प्रकार के वातावरण में तेजी से वृद्धि करता है। इसका प्रकोप खाद्यान्न, फसलों जैसे धान, ज्वार, मक्का, सोयाबीन, मटरतिल, अरंडी, गन्ना, बाजरा, मूंगफली, सब्जियों एवं उद्यान फसलों में भी देखा गया है।
- ❖ इसके बीज अत्यधिक सूक्ष्म होते हैं, जो अपनी दो स्पंजी गद्दियों की मदद से हवा तथा पानी द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान तक आसानी से पहुंच जाते हैं।

कैसे होता है गाजर घास का प्रसार ?

- ❖ फसलों के बीजों, सिंचाई, खाद, हवा, बारिश, मड़ाई और यातायात के साधनों से एक जगह से दूसरी जगह पर पहुंचते और पनपते रहते हैं। किसी फसल के आस-पास यदि गाजर घास का प्रकोप हो और वहाँ यदि फसल की कटाई और मड़ाई को सावधानीपूर्वक नहीं किया जाए तो गाजर घास के बीज उपज के जरिये अन्य खेतों तक पहुँच जाते हैं। गाजर घास नहरों के किनारों पर बहुतायत से देखी जाती है। नहर या नालियों में उगी गाजर घास के बीज पकने के बाद वहीं गिर जाते हैं और सिंचाई के पानी के साथ खेतों में पहुँच जाते हैं।
- ❖ इसी तरह अनेक खरपतवारों से जब किसान खाद बनाते हैं तब उनमें छिपकर भी गाजर घास के बीज खेतों तक पहुँच जाते हैं। इस घास से प्रभावित चारागाह में पशुओं के चरने के दौरान उनके जरिये भी गाजर घास के बीज एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँच जाते हैं। तेज हवा का झोंका भी गाजर घास के सूक्ष्म और हल्के बीजों को कहीं से कहीं पहुँचा देता है। गाजर घास से प्रभावित फसल की मड़ाई कराने के बाद यदि मशीन को अच्छी तरह से साफ नहीं किया जाए तो भी इस के बीजों के दूसरे बीजों के साथ मिलने की आशंका रहती है।

क्यों विनाशकारी है गाजर घास ?

- ❖ गाजर घास मनुष्य और पशुओं के लिए भी एक गंभीर समस्या है। इस से खाद्यान्न फसल की पैदावार में लगभग 40 प्रतिशत तक की कमी आंकी गई है। इस पौधे में पाये जाने वाले एक विषाक्त पर्दाथ के कारण फसलों के अंकुरण एवं वृद्धि पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।
- ❖ इस खरपतवार के लगातार संपर्क में आने से मनुष्यों में डरमेटाइटिस, एक्जिमा, एर्लजी, बुखार, दमा आदि की बीमारियां हो जाती हैं। पशुओं

के लिए भी यह खतरनाक है। इससे उनमें कई प्रकार के रोग हो जाते हैं एवं दुधारू पशुओं के दूध में कड़वाहट आने लगती है। पशुओं द्वारा अधिक मात्रा में इसे चर लेने से उनकी मृत्यु भी हो सकती है।

- ❖ बुरे प्रभावों के अलावा, यह कई अन्य समस्याओं का भी कारण बनता है जैसे आम रास्तों में रुकावट और पार्कों, उद्यानों और आवासीय कॉलोनिजों के सौंदर्य मूल्यों को कम करना।
- ❖ दुनिया के करीब 20 देशों में जहरीले खरपतवार, गाजर घास का प्रकोप है।
- ❖ ये आक्रामक ढंग से फैलती है और ऐसे जहरीले रसायनों का स्राव करती है जिससे जमीन बंजर हो जाती है। भारत के लिए ये एक घुसपैटिया वनस्पति है।
- ❖ ये हर तरह के वातावरण में तेजी से बढ़ती है। माना जाता है कि अमेरिका या कनाडा से आयातित गेहूँ में छिपकर गाजर घास के सूक्ष्म बीज भारत आ चुसे।
- ❖ देश में पहली बार 1955 में इसे पुणे में देखा गया था। इसने अब तक देश के ग्रामीण और शहरी इलाकों में खेतीहर जमीन, रेल की पटरियों के किनारे की खाली पड़ी सरकारी जमीन, कॉलेजों-अस्पतालों, खेल के मैदानों, सड़कों के किनारे की खाली जगहों पर अपनी जड़ें ऐसे जमाई कि अब इस का रकबा 3.5 करोड़ हेक्टेयर तक फैल चुका है।

गाजर घास के नियंत्रण के उपाय :

- ❖ वर्षा ऋतु में गाजर घास को फूल आने से पहले जड़ से उखाड़ कर कंपोस्ट एवं वर्मी कंपोस्ट बनाना चाहिए।
- ❖ घर के आस-पास एवं संरक्षित क्षेत्रों में गेंदे के पौधे लगाकर गाजर घास के फैलाव व वृद्धि को रोका जा सकता है।
- ❖ अक्टूबर नवंबर में अकृषित क्षेत्र में प्रतिस्पर्धात्मक पौधे जैसे चकोड़ा बीज एकत्रित कर उन्हें फरवरी मार्च में छिड़क देना चाहिए यह वनस्पतियां गाजर घास की वृद्धि एवं विकास को रुकती है।
- ❖ वर्षा आधारित क्षेत्रों में शीघ्र बढ़ने वाली फसलें जैसे ज्वार, बाजरा, मक्का आदि की फसलें उगाई जानी चाहिए।
- ❖ अकृषित क्षेत्रों में शाकनाशी रसायन जैसे गलायफोसेट 1.0-1.5 प्रतिशत या मेट्रिब्यूजीन 0.3-0.5 प्रतिशत घोल का फूल आने के पहले छिड़काव करने से गाजर घास नष्ट हो जाती है।
- ❖ ग्रीष्म एवं शरद ऋतु में अकृषित क्षेत्रों में अंकुरित होने पर कुछ बढ़वार करने के बाद पानी ना मिलने के कारण इनका विकास नहीं हो पाता है पर वर्षा होने पर वही पौधे शीघ्र बढ़कर बीजों का उत्पादन कर देते हैं अतः ऐसी समय इन्हें शाकनाशी द्वारा नष्ट करना चाहिए।
- ❖ फसलों में गाजर घास को रासायनिक विधि द्वारा नियंत्रित करने के लिए खरपतवार वैज्ञानिक की सलाह अवश्य ले।
- ❖ मैक्सिकन बीटल नामक कीट को वर्षा ऋतु में गाजर घास पर छोड़ना चाहिए।
- ❖ जगह-जगह इकट्ठा कर लोगों को गाजर घास के दुष्प्रभाव, नियंत्रण के बारे में जानकारी देकर उन्हें जागरूक करना चाहिए।

डॉ. ममता चंदेल, डॉ. मुकेश चंद शर्मा,
डॉ. राहुल चौधरी एवं डॉ. अंकलेश कटारा
पशु विज्ञान केन्द्र, बोजूदा, चित्तौड़गढ़



भूमिहीन व सीमान्त किसानों के लिए आजीविका का महत्वपूर्ण स्रोत बकरी पालन



खेती के साथ-साथ एक या अधिक पशुधन रखने की परम्परा बहुत पुरानी है। बड़े व मध्यम किसान बड़े पशु पालने में अधिक रुचि रखते हैं, लेकिन भूमिहीन, सीमान्त व लघु किसान एवं पशुपालक अधिकतर बकरी पालन करते हैं। बकरी को भारत में "गरीब की गाय" के नाम से भी जाना जाता है। भारत में बकरियां विश्व की कुल जनसंख्या का लगभग 20 प्रतिशत हिस्सा है। बकरियों की संख्या



के मामले में भारत का दूसरा स्थान है। बकरी प्राचीन काल से ही सीमान्त व भूमिहीन किसानों की आय का स्रोत रहा है। इन सीमित संसाधनों वाले ग्रामीण पशुपालकों के जीवन निर्वहन व खाद्य सुरक्षा में बकरी की भूमिका महत्वपूर्ण है। कम वर्षा तथा कम उपजाऊ क्षेत्रों में बकरी पालन एक उत्तम व्यवसाय है। बकरियां न्यूनतम चारा खाकर मनुष्यों को उच्च स्तर का आहार जैसे दूध, मांस इत्यादि देती है। उच्च रोग प्रतिरोधी क्षमता और अधिक उत्पादन के कारण निर्धन परिवारों हेतु बकरी पालन सर्वश्रेष्ठ व्यवसाय माना जाता है। कम पूंजी से प्रारम्भ होने वाला यह व्यवसाय डेयरी फार्म की तुलना में कम जोखिम भरा व अधिक लाभ देने वाला व्यवसाय है। आज की बढ़ती महंगाई में जब गाय व भैंस की कीमत व उनके पालन पोषण का खर्च बहुत अधिक होता है, बकरी पालन ग्रामीण बेरोजगारों के लिए रोजगार का अच्छा विकल्प है। बकरी के दूध के असंख्य फायदे, मांस के लिए इनका उपयोग, अधिक तापमान में भी जीवित रहने, उच्चरोग प्रतिरोधक क्षमता व दूसरे पशुओं की तुलना में कम लागत, साल में दो बार बच्चे देने की क्षमता इत्यादि गुण बकरी पालन को ओर अधिक फायदेमंद बनाते हैं। बकरी पालन को ओर अधिक लाभप्रद बनाने तथा इसे उद्योग के रूप में विकसित करने के लिए हमें वैज्ञानिक पद्धति से इनका पालन पोषण व प्रबंधन करना चाहिए जैसे उपयुक्त चारा प्रबंधन, उपयुक्त आवास, उचित समय पर परजीवी एवं कृमिनाशक दवाओं का उपयोग, समय पर टीकाकरण तथा जन्मोपरान्त बच्चे की उचित देखभाल व पोषण प्रबंधन आदि। किसान व पशुपालक भाई विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय के अन्तर्गत संचालित विभिन्न पशु विज्ञान केन्द्रों के माध्यम से वैज्ञानिक बकरी पालन पर प्रशिक्षण प्राप्त कर आधुनिक बकरी पालन व्यवसाय शुरू कर सकते हैं।

“धीणे री बातयां”

पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम
माह के तीसरे गुरुवार को
सायं 5.30 से 6.00 बजे तक
प्रदेश के 17 आकाशवाणी
केन्द्रों से प्रसारण



पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी
प्राप्त करने के लिए
टोल फ्री हैल्पलाइन
1800 180 6224

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर

मुख्य संपादक

प्रो. (डॉ.) आर. के. धूड़िया

संपादक

डॉ. दीपिका धूड़िया

डॉ. मनोहर सेन

संकलन सहयोगी

सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली

प्रसार शिक्षा निदेशालय

☎ 0151-2200505

email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/
विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया

॥ पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम् ॥